3. भाषा सामाजिक प्रक्रिया है—सामाजिक परिवेश में ही उसका जन्म, विकास अर्जन और प्रयोग होता है। अतः वह समाज सापेक्ष है। मनुष्य सापेक्ष है। मनुष्य स्वतंत्र सामाजिक प्राणी है और भाषा उसकी ही कृति है।

भाषा कोई दैविक प्राकृतिक अथवा सांस्कृतिक सम्पदा नहीं है। वह सामाजिक परिवेश में मानव-मस्तिष्क की उपज है।

4. भाषा सतत् परिवर्त्तनशील प्रक्रिया है—भाषाई परिवर्त्तन ध्वनियों शब्दों पदबंधों एवं वाक्य रचनाओं आदि सभी स्तरों पर हो सकते हैं। पर, यह पविर्त्तन इतने परोक्ष रूप से और इतने शनैः शने होते है कि उनका पता तत्काल नहीं चलता।

5. प्रत्येक भाषा का एक मानक रूप होता है—यद्यपि भाषा सतत् परिवर्तित होती रहती है। विशेषतः एक विशाल भूखंड में प्रयुक्त होने वाली भाषा के प्रयोग में भिन्नताएँ आ जाना और भी स्वाभाविक है।

इस कारण विभिन्न भागों में उनकी ध्वनियों के उच्चारण शब्द एवं रूप रचना अनुतान में नहीं बल्कि वाक्य संरचनाओं में भी अंतर पाया जाता है। किन्तु, भाषा का एक मानक रूप भी होता है और हमें सदा मानक रूप का ही प्रयोग करना चाहिए।

6. भाषा का कोई अन्तिम रूप नहीं है—समाज सापेक्ष होने के फलस्वरूप वह सदैव विकास की ओर अग्रसर होती रहती है। जो भाषाएँ बोलचाल में नहीं है उनका तो अंतिम रूप निश्चित है, पर जीवित भाषाओं में तो परिवर्त्तन अवश्यम्भावी है। जीवन्त भाषा का यही लक्षण है।

7. भाषा परम्परागत और व्यक्ति उसका अर्जन कर सकता है—उत्पन्न नहीं कर सकता। भाषा परम्परा से चली आ रही है। व्यक्ति उस परम्परागत भाषा का ही समाज में अर्जन करता है।

8. प्रत्येक भाषा की संरचना दूसरी भाषा से भिन्न होती है—ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य अर्थ आदि दृष्टियों से किसी एक या अनेक स्तरों पर एक भाषा का ढाँचा दूसरी भाषा के ढाँचे से भिन्न होता है। यह भिन्नता ही एक भाषा को दूसरे से पृथक कर देती है।

9. भाषा स्थूल से सूक्ष्म एवं अपरिपक्वता से परिपक्वता की ओर विकसित होता है—भाषा अपनी प्रारंभिक अवस्था में सूक्ष्म भावों एवं अनुभूतियों को व्यक्त करने में समर्थ नहीं रहती है। उसका शब्द-भंडार भी कम रहता है तथा संरचनात्मक गठन भी शिथिल रहता है। किन्तु कलान्तर में वही भाषा समृद्धशाली हो जाती है।

10. भाषा संयोगावस्था से वियोगवस्था की ओरर विकसित होती है—आधुनिक भाषाओं के इतिहास एवं क्रमांतर विकास के शास्त्रीय अध्ययन से सिद्ध होता है कि भाषा संयोग से वियोग की ओर अग्रसर होती है।

11. मुनष्य प्रयत्न लाघव को विशेष पसंद करता है—और भाषा चूँकि मानव अर्जित सम्पत्ति है। अतः भाषा स्वभावतः कठिनता से सरलता की ओर प्रवाहित होती है।

Scanned with CamScanner